आर.एन.आई-संख्या : DELHIN/2007/23260
पोस्टल रजि. संख्या : DL (N) 06/213/11-13
प्रकाशन की तिथि–2 फरवरी 2014

सृष्टि संवत्- 1, 96, 08, 53, 114
युगाब्द-5114, अंक-80-68, वर्ष-7,
माघ कृष्ण पक्ष, फरवरी -2014
शुल्क- 5/ रुपये प्रति, द्विवार्षिक शुल्क-100/ रुपये
डाक प्रेषण तिथि : 5-6 फरवरी, कुल पृष्ठ-8

प्रेषक : सम्पादक, कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्ष गुरुकुल, टटेसर जौन्ती, दिल्ली-81

महर्षि दयानन्द सरस्वती

ओ३म्

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

(राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा का मासिक विचार पत्र)

E-mail : krinvantovishwaryam@gmail.com सम्पर्क सूत्रः 9350945482 Web: www.aryanirmatrisabha.com

संपादक : हनुमत्प्रसाद 'अथर्ववेदाचार्य' सह-संपादक : आचार्य सतीश

मृळा नो रुद्रोत नो मयस्कृधि क्षयद्वीराय नमसा विधेम ते। यच्छं च योश्च मनुरायेजे पिता तदश्याम तव रुद्र प्रणीतिषु ॥४५॥ -ऋ० १। ८। ५। २

व्याख्यान–हे दुष्टों को रुलानेहारे रुद्रेश्वर ! हमको **"मृळ"** सुखी कर। तथा **"मयस्कृधि"** हमको मय, अर्थात् अत्यन्त सुख का सम्पादन कर। **"क्षयद्वीराय, नमसा, विधेम, ते"** शत्रुओं के वीरों का क्षय करनेवाले आपको अत्यन्त नमस्कारादि से परिचर्या करनेवाले हम लोगों का रक्षण यथावत् कर। **"यच्छम्"** हे रुद्र ! आप हमारे पिता (जनक) और पालक हो, हमारी सब प्रजा को सुखी कर। **"योश्च"** और प्रजा के रोगों का भी नाश कर। जैसे **"मनुः"** मान्यकारक पिता **"आयेजे"** स्वप्रजा को संगत और अनेकविध लाड़न करता है, वैसे आप हमारा पालन करो। हे **"रुद्र"** भगवान्! **"तव, प्रणीतिषु"** आपकी आज्ञा का प्रणय अर्थात् उत्तम न्याययुक्त नीतियों में प्रवृत्त होके हम **"तदश्याम"** वीरों के चक्रवर्ती राज्य को आपके अनुग्रह से प्राप्त हों ॥४५॥

सम्पादकीय

आर्य, आर्य समाज और आर्यावर्त्त

सृष्टि में उत्पन्न मानव मात्र ही नहीं, प्रत्येक प्राणीमात्र सुख चाहता है, सुख प्राप्ति के लिए चाहिए होते हैं साधन! और जितने सुन्दर, सुव्यवस्थित और उत्तम साधन होते हैं उतना ही लक्ष्य अर्थात् सुख स्थिर और उत्तम होता है। प्रायशः सृष्टि के प्राणी अपने-अपने स्वाभाविक ज्ञान से अपना जीवन निर्वाह करते हैं। एक मनुष्य ही ऐसा प्राणी है, जिसे स्वाभाविक ज्ञान तो नाममात्र ही मिलता है, अतः हमारा जीवन नैमित्तिक ज्ञान से चलता है, यह नैमित्तिक ज्ञान ही हमारे जीवन में सुख की ओर बढ़ने का प्रथम साधन है। प्राचीनकाल में यह नैमित्तिक माता-पिता और आचार्य से व्यवस्थित और उत्तम रीति से प्राप्त होता था, जिससे मनुष्य श्रेष्ठता की ओर सरलता से बढ़ता जाता था। और वेदोक्त धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष को प्राप्त करने में सक्षम होता था। परिस्थितियों में बिगाड़ आया तो इतना बिगाड़ आया कि प्रथम गुरु माता से ही विद्या-ज्ञान का अधिकार छीन लिया गया, नैमित्तिक ज्ञान का पहला द्वार ही बन्द हो गया, विवाह की योग्यता मनुस्मृति में उल्लिखित और ऋषिवर दयानन्द द्वारा संस्कार विधि में जो वर्णित है, (कि-प्रथम तो चार वेद, न हो सके तो तीन वेद, वह भी न हो तो दो वेद और उसमें भी सक्षम न हो तो एक वेद को अध्ययन करने के उपरान्त ही वर को कन्या देनी चाहिए। इसकी कोई आवश्यकता ही नहीं रही क्योंकि अनपढ़-गंवार कन्या का वरण तो कोई भी करे, योग्यता की अनिवार्यता ही समाप्त हो गई, सो अल्पपठित और अपठित अर्थात् अनपढ़ों के भी विवाह होने लगे, तब नैमित्तिक ज्ञान का द्वितीय द्वार भी अवरुद्ध हो गया। और जब माता अज्ञानी, पिता अज्ञानी तो उनकी सन्तान को ज्ञानवान बनाने के लिए आचार्यों ने, विद्वानों ने रुचि लेना प्रथम तो न्यून और धीरे-धीरे बन्द ही कर दिया। फलस्वरूप मनुष्य बनना ही कठिन हो गया, तो आर्य अर्थात् श्रेष्ठ, विद्यावान, परोपकारी, धर्मात्मा कौन बनता? कैसे बनता? और कौन बनाता? जो प्रक्रिया हमारे पूर्वजों के जीवन का स्वाभाविक अंग थी, वह लुप्त होती चली गयी, किन्तु दुर्भाग्य कि किसी ने ध्यान भी नहीं दिया, सुधार की तो बात कहाँ? ऐसे ही सैकड़ों ही नहीं, अपितु हजारों वर्ष बीत गये। तब ऋषिवर दयानन्द ने इस सारी छिन्न-भिन्न हो चुकी परम्परा को खोजकर, शोधकर प्राप्त किया। प्राप्त करने के उपरान्त इस परम्परा का प्रचार-प्रसार किया, ग्रन्थ लिखे, और यह परम्परा पुनः न टूटे, न छिन्न-भिन्न हो और न लुप्त हो, अपितु पुनः पुनर्जिवित हो, इसके लिए ऋषिवर दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना की, कि-यह समाज मिलकर उन साधनों का, अर्थात् श्रेष्ठ परम्पराओं, जीवनमूल्यों का अर्थात् मनुष्य बनने और मनुष्य को आर्य बनाने की प्रणाली का विस्तार करेगा। आर्य बढ़ेंगे, तो आर्य समाज बढ़ेगा और समाज ही आर्य हो जायेगा तो आर्यावर्त्त बनेगा। जैसा कि-महाभारत युद्ध से पहले था। अर्थात् एक अखण्ड आर्यजनों से भरा-पूरा संसार का सर्वश्रेष्ठ राष्ट्र।

लेकिन दुर्भाग्य ने फिर हमारा पीछा करना प्रारम्भ कर दिया, और आर्य समाज में प्रविष्ट होने वाले लोग, आर्य सिद्धान्तों को बिना जाने, बिना समझे और बिना जीवन में उतारे ही नाममात्र के आर्य कहलाने लगे, सिद्धान्तनिष्ठ आर्यजन तो हासिये पर चले गये, और त्याग के फलस्वरूप आर्य समाजों के पास जो सम्पत्ति, उन्नति के साधनभूत बनने/बनाने के लिए इकठ्ठी हुई थी, उसके लोभी छल, कपट, ईर्ष्या और द्वेष से ग्रस्त होकर आर्य समाजों को तोड़ने लगे, सज्जन पलायन को विवश होते चले गये,

शेष अगले पृष्ठ पर

सम्पादकीय का शेष.....

आर्य कहलाने वालों में आर्य शब्द आंशिक रूप से भी न बचा। परिणामस्वरूप आज छिन्न-भिन्न अवस्था में हैं। जब व्यक्ति आर्य नहीं, तब समाज कैसे आर्य हो? और जब व्यक्ति आर्य नहीं, समाज आर्य नहीं, तब देश कैसे आर्यावर्त्त हो सकता है? आज आर्य समाजें जिन प्रान्तीय और सार्वदशिक सभाओं के मार्गदर्शन में चलनी चाहिए थी, वही कई-कई भागों में बंटकर एक साथ बैठकर समाधान को तैयार नहीं है। फलस्वरूप ऊपर से नीचे तक समाज टुकड़े-टुकड़े में बंट रहा है। जैसे-वर्त्तमान में देश की परिस्थिति है, वैसे ही आर्य समाज की परिस्थिति है। तब क्या हो? कैसे आर्य, आर्य समाज और आर्यावर्त्त को प्राप्त किया जाय? आज सारे देश के सिद्धान्तनिष्ठ, भावनाशील आर्य सोचते-विचारते रहते हैं, लेकिन समाधान प्राप्त नहीं कर पाते।

आर्यों! आर्याओं! इस सारी महामारी का सामाधान हम सभी आर्यों को ही मिलकर करना होगा, चाहे शीघ्र करो, और चाहे तो विलम्ब से करो। कोई कोर्ट, पंचायत या आयोग यह समाधान नहीं कर सकते। वे तो सामान्य जनता के ही वादों-प्रतिवादों से अटे पड़े हैं। उन्हीं का समाधान नहीं कर पाते, फिर आर्यों का समाधान तो और भी कठिन है। अत: हम सभी आर्यों का, आर्यनेताओं का, आर्य विद्वानों का आह्वान करते हैं, कि-आइए, मिलिए, बैठिए और परस्पर वार्ता कीजिए। जब बड़े-बड़े शत्रु देश मिल बैठकर समाधान कर सकते हैं, तो हम क्यों नहीं? वे बड़े-बड़े स्वार्थों के होते हुए समाधान निकाल लेते हैं, तो फिर हम सब क्यों नहीं? हमारे सामने सवा सौ करोड़ दीन-हीन, निरीह भारतीय व्यक्ति हैं, जिन्हें आर्य बनाना है, वे आज मत, पन्थ, सम्प्रदाय, मजहब और रिलीजनों के शिकार बन रहे हैं, विधर्मी बनाये जा रहे हैं, पाखण्ड, आडम्बर और अन्धविश्वास की गहरी खाई में डाले जा रहे हैं। अध्यात्म के नाम पर गुरु घण्टालों का शिकार हो रहे हैं, ध्यान के नाम पर विपश्यना, योग के नाम पर हठ योग, समाज की उन्नति के नाम पर गैर सरकारी संगठनों (N.G.Os.) की बाढ़ इन्हें बहा रही है, और राजनीति के नाम पर इन्हें नीति से भी शून्य अराजक तत्त्व बर्बाद कर रहे हैं। और हम इनकी रक्षा, उन्नति के उपाय नहीं कर पा रहे हैं। अत: आओ मिलकर कार्य करो, प्रत्येक व्यक्ति को आर्य बनाओ, समाज को आर्य समाज और राष्ट्र को आर्यावर्त्त। इसके लिए पुन: त्याग की परम्परा को अपना लो, प्राप्ति की नहीं त्याग की इच्छा करो, थोड़ा त्याग करेंगे तो अधिक मिलेगा, घर त्याग करेंगे तो समाज मिलेगा, और समाज में त्याग करेंगे तब राष्ट्र मिलेगा। आओ इसे प्राप्त करें।

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा की मासिक गतिविधियाँ

बिना सिद्धांतों को समझे, उन्हें धारण किए मनुष्य का निर्माण नहीं होता है। राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा निरन्तर वेद द्वारा प्रतिपादित और ऋषि दयानन्द द्वारा व्याख्यायित सिद्धांतों के माध्यम से निर्माण कार्य में संलग्न है। विगत् माह भी महिला व पुरुषों के लिए निम्न आर्य / आर्या निर्माण सत्र लगाए गए।

आर्य प्रशिक्षण सत्र

	स्थान	दिनांक
1.	आर्य समाज घिटोरनी, दिल्ली	04-05 जन.
2.	सनातन धर्मशाला, नौगांव अलवर, राजस्थान	04-05 जन.
3.	राजनगर एक्सटैंशन, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	04-05 जन.
4.	आर्य सदन, कृष्णा कॉलोनी, भिवानी, हरियाणा	05-06 जन.
5.	पंचायत घर, गांव नांगल ठाकरान, दिल्ली	11-12 जन.
6.	गांव पलवल, कुरुक्षेत्र, हरियाणा	11-12 जन.
7.	खेल स्टेडियम, गांव खानपुर, कैथल, हरियाणा	11-12 जन.
8.	गुरुकुल चित्तौड़ाझाल, मुजफ्फरनगर, उत्तर प्रदेश	11-12 जन.
9.	राजकीय उच्च विद्यालय डाबड़ा, हिसार, हरियाणा	11-12 जन.
10.	अम्बेड़कर भवन, सैदपुर, मोदीनगर, गाजियाबाद, उ. प्र.	18-19 जन.
11.	आर्य समाज बिजनौर, उत्तर प्रदेश	18-19 जन.
12.	आर्य शिक्षा सदन, न्यू विकास नगर, लोनी गाजियाबाद	25-26 जन.
13.	आर्य समाज सैक्टर-12, (हुडा) पानीपत, हरि.	25-26 जन.
14.	आर्य समाज भवन, नहर कॉलोनी, बीकानेर, राजस्थान	01-02 फर.

उत्तम क्वालिटी के ओ३म् ध्वज व आर्यावर्त्त हवन सामग्री की प्राप्ति हेतु सम्पर्क करें-

आर्य मार्किट, शिवाजी कॉलोनी, रोहतक

-सम्पर्क सूत्र- 9466904890

आगामी आर्य प्रशिक्षण सत्रों की सूचना

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा द्वारा आर्य विद्या देने हेतू द्विदिवसीय सत्रों का आयोजन प्रतिमाह अनेक स्थानों पर हो रहा है। सत्रों की जानकारी समय पर सभी को मिल सके इसके लिए आगामी सत्रों की सूचना, जो अब तक निश्चित हो चुके हैं, दी जा रही है। इसके अलावा भी कई सत्र जो बाद में निश्चित होते हैं उन की सूचना एस.एम.एस. द्वारा आर्यों को भेज दी जाती है। सभी आर्यों से यह भी निवेदन है कि सत्रों की तिथियाँ कम से कम एक माह पहले निर्धारित करके सभा के महासचिव आचार्य जितेन्द्र जी से अनुमति ले लें, जिससे उनकी सूचना भी पत्रिका में दी जा सके।

आगामी आर्य प्रशिक्षण सत्र

क्र.सं.	स्थान	दिनांक	सम्पर्क	दूरभाष
1.	गुरुकुल सूर्यकुण्ड, दाता गंज रोड़, बदायूँ	08-09 फरवरी	राम शंकर आर्य	8477029637
2.	राजकीय हाईस्कूल बिठमढ़ा, हिसार, हरियाणा	08-09 फरवरी	आर्य दयानन्द	9416388721
3.	गुरुकुल चित्तौड़ाझाल, मुजफ्फरनगर, उत्तर प्रदेश	08-09 फरवरी	आर्य नरेन्द्र	9719940999
4.	आर्य समाज, विशाखा इन्कलेव, पीतम पुरा, दिल्ली	08-09 फरवरी	आर्य सत्येन्द्र	9250901972
5.	आर्य समाज गांव भौण, मैनपुरी, उत्तर प्रदेश	08-09 फरवरी	आर्य विष्णुमित्र	9412069896
6.	आर्यसमाज गांव कबलाणा, झज्जर, हरियाणा	08-09 फरवरी	आर्य बलजीत	9466428249
7.	बरवाला हिसार, हरियाणा	15-16 फरवरी	आर्य अनील	9034763824
8.	आर्य पब्लिक स्कूल, हैबत पुर, हिसार, हरियाणा	15-16 फरवरी	आर्य सतपाल	9466062942
9.	आदर्श बाल सदन विद्यालय, बहादुरपुर जट, हरिद्वार, उत्तराखण्ड	15-16 फरवरी	आर्य नकल सिंह	9012520669
10.	सामुदायिक केन्द्र, गांव रावल वास, हिसार, हरियाणा	23-24 फरवरी	आर्य चतर सिंह	9416941234
	आर्या प्रशिक्षण सत्र			
1.	दयानन्द सिनियर सैकेण्डरी स्कूल, फिरोजपुर झिरका, मेवात, हरि.	08-09 फरवरी	आर्य अमी चन्द	9812606465
2.	संजय गांधी कॉलेज, गांव धनौरा, लाडवा कुरुक्षेत्र, हरियाणा	08-09 फरवरी	आर्य सरदारा लाल	9467410760

नारी के अतीत व वर्तमान का सामाजिक व चारित्रिक स्वरूप

–पं. उम्मेद सिंह विशारद,वैदिक प्रचारक, मोहकमपुर, देहरादून, उत्तराखण्ड

आर्य समाज के संस्थापक, महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने नारी की शिक्षा व उच्च चरित्र पर बहुल बल दिया है उन्होंने अपने ग्रन्थों में स्पष्ट किया है कि नारी परिवार व समाज की रीढ़ की हड्डी होती है और परिवार समाज व राष्ट्र में नारी की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। नारी के गुणों, योग्यता, रहन-सहन तथा संस्कारों का समाज पर बड़ा प्रभाव पड़ता है।

आर्यसमाज ने अपने जन्म काल से ही नारी शिक्षा सुधार में महत्वपूर्ण कार्य किया है शोषित व ताड़ित नारियों के उज्जवल भविष्य के लिये आर्य समाज ने पहल की, फलस्वरूप आज के युग में नारी प्रत्येक क्षेत्र में पुरुषों के बराबर कार्य कर रही है आज की नारी राष्ट्रपति तक के पदों को सुशोभित कर रही हैं। राजनीति, विज्ञान, शिक्षा व सामाजिक क्षेत्र में नारी ने अपना परचम लहराया है, यह सब आर्य समाज की नारी के प्रति पहल करके शिक्षा का प्रभाव है।

आज आर्य समाज बहुत चिन्तित है कि वर्तमान में समाज का चरित्र नारी के प्रति क्यों गिर रहा है। क्यों? घृणित बलात्कार करके मानवता को शर्मसार कर रहे हैं। अबोध बालिकाओं तक का बलात्कार हो रहा है। क्यों समाज का इतना नैतिक पतन हो रहा है, इस विकट समस्या पर हमें गम्भीरता से विचार करना पड़ेगा और सुधार के लिये आर्य समाज को आन्दोलित होना पड़ेगा। कुछ अतीत मध्य व वर्तमान में नारी की समस्या पर विचार करते हैं।

वैदिक युग में नारी की स्थिति : वैदिक युग में नारी की बहुत ऊँची स्थिति थी, परिवार में नारी को देवी कहा जाता था। अथर्ववेद में कुल वधु को सम्बोधित करके कहा गया है।

साम्राज्ञी एधि श्वमुरेषु सम्राज्ञी उत देवृषु।

ननान्दुः सम्राज्ञी एधि सम्राज्ञी उतश्वश्रुवाः॥

अर्थातः हे कुलवधु तू जिस नवीन घर में जाने वाली है तू वहा की सम्राज्ञी है, वहां तेरा राज होगा। तेरे श्वसुर देवर, ननदें और सास तुझे सम्राज्ञी समझेंगे।

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता : जहाँ नारियों का सम्मान व पूजा होती है वहाँ देवता रमते हैं वैदिक युग में नारियों को उँची से ऊँची शिक्षा दी जाती थी। नारियों में उच्च संस्कार आत्मरक्षा, पतिव्रत, धर्म, सदाचार, पवित्रता, शालीनता सहनशीलता नारी सुलभ लज्जा आदि के विशेष गुण थे। यही कारण है कि वैदिक युग में नारी ऋषिकाऐं तथा शास्त्रार्थ महारथी हुई थी और सम्पूर्ण मानव समाज में एक उच्च चरित्र की आदर्श संहिता थी। नारी पुरुष दोनों अपनी अपनी मर्यादा में रहते थे।

वैदिक युग में कन्या का विवाह युवावस्था में होता था, वैदिक काल का विवाह स्वयंवर के सिद्धान्त पर आश्रित था। स्वयंवर का अर्थ है–स्वयं अपने आप वरण करना और स्वयंवर का अधिकार कन्या को दिया जाता था, वर कन्या को माला नहीं पहनाता था, कन्या जिस वर के प्रति स्वीकृति देती थी उसके गले में वह माला डालती थी। सीता स्वयंवर हुआ, द्रोपदी का स्वयंवर हुआ, अन्तिम स्वीकृति कन्या की थी वर की नहीं थी। वैदिक युग में दहेज जैसी कोई बात नहीं थी किन्तु विवाह के समय कन्या के माता पिता वर को कुछ वस्त्र, कुछ आभूषण देते थे ताकि वह गृहस्थी चला सके। विवाह के समय वर को गौ देते थे ताकि उन्हें दूध दही मिल सके, अगर वैदिक युग में कन्यापक्ष की तरफ से कुछ दिया जाता था तो गौ तथा अलकृंत कन्या। इस प्रकार वैदिक युग में नारी का स्थान बहुत ऊँचा था।

मध्य युग में नारी की स्थिति : मध्य युग के आते-आते नारी के प्रति दृष्टिकोण बदल गया और इतना बदला कि यह स्त्री की पूर्ण अधोगति का युग था। इस युग में स्त्री को मौलिक व सामाजिक अधिकारों से वंचित कर दिया गया था।

स्त्री शुद्रौ नाधीयताम– यह कहा जाने लगा। तुलसीदास ने तो यहां तक लिख डाला कि ढोल, गंवार, शूद्र, पशु नारी ये सब ताड़न के अधिकारी–स्त्री को गंवार मूर्ख गिना जाने लगा, स्त्री को लूट का अंग माना जाने लगा और कन्यायों को अपहरण से बचाने के लिए उसे घर के भीतर रखा जाने लगा। ऐसी हालत में शिक्षा कहाँ हो सकती थी। कन्यायों को अशिक्षित रहना समय की मांग हो गयी। कहा जाता है कि मुसलमानों के आक्रान्ता के रूप में भारत आने से बाल विवाह की प्रथा चल पड़ी और छोटे बच्चे बच्चियों का विवाह होने लगा। इस प्रकार दहेज की प्रथा भी बढ़ गयी, जो जितना अधिक दहेज देता था कन्या को उतना ही सुखी माना जाता था।

भारत के मध्यकालीन युग में स्थिति बहुत बदल गयी, समाज में नयी-नयी समस्याएं उत्पन्न हो गयी। अगर किसी स्त्री के पति का देहान्त हो जाए तो भारत में उसके सामने दो मार्ग थे या तो आजीवन विधवा रहकर घोर कष्ट झेलती रहे या वह पति के साथ चिता में भस्म हो जाए। इस काल में सती प्रथा के काल तक विधवाओं की जो दुर्दशा की जाती रही वह बहुत भयंकर काल था। विधवा होते ही नारी का सिर मूंड दिया जाता था। लज्जा के मारे वह बाहर नहीं निकल सकती थी। उसे अपशकुन का कारण समझा जाने लगा। विधवा के लिए ऐसी विकट स्थिति पैदा की जाती थी कि उसके सामने सती होना ही एक मार्ग रह जाता था।

इस प्रकार नारी जाति के ऊपर मध्ययुग में उत्पीड़न, शोषण, अत्चाचार, अन्याय, अपमान व केवल भोग की वस्तु समझ कर सर्वाधिक अत्याचार हुआ।

वर्तमान युग में स्त्री की स्थितिः–आज की नारी ने अपने पिछले बन्धनों को तोड़ दिया है। वह हर क्षेत्र में पुरुषों के स्तर पर आ रही है। अंग्रेजों का शासन आया। 1823 में अंग्रेजी शासन ने एक कमेटी बनायी जिसका उद्देश्य इस देश में शिक्षा प्रचार करना था। 1835 में लार्ड मैकाले को भारतीय शिक्षा पर विचार करने वाली सोसायटी का सदस्य बनाया गया। उसने यह निश्चित मत व्यक्त किया कि भारत में ऐसी शिक्षा प्रणाली का सूत्रपात करना उचित है जिससे भारतीय वेषभूषा में तो भारतीय हो किन्तु अन्दर से अंग्रेज हों और इस योजना पर लार्ड मैकाले बहुत सफल रहा है, जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण वर्तमान में दिखाई दे रहा है। इसका पश्चात् यह हुआ कि कन्याओं को घर की चार दीवारी से निकल कर शिक्षा प्राप्त करने का वैसा ही अवसर प्राप्त होने लगा जैसे युवकों को प्राप्त हो रहा था और लड़कों के साथ-साथ लड़कियों के स्कूल कॉलेज भी खोले जाने लगे।

सन् 1977 से सरकार ने कन्या के लिए 18 वर्ष व वर के लिए 21 वर्ष आयु विवाह के लिए कर दी है। इससे भी कन्याओं को शिक्षा का अवसर मिलने लगा। नारी के सामाजिक विचारों व संस्कारों में वैदिक युग व मध्युग की तुलना में अधिक स्वतन्त्र विचार धारा बनने लगी, परिणाम स्वरूप नारी ने जहाँ पुरुषों की हर क्षेत्र में बराबरी की है वही कहीं न कहीं अपनी नारी सुलभ लज्जा का परित्याग भी किया है। पाश्चात्य संस्कृति व सभ्यता की अन्धी दौड़ में नारी ने अपने संस्कारों के उच्च आदर्शों की बलि देने में कोई कसर नहीं छोड़ी। सिनेमा जगत् में, कल्बों में, आदि आदि जगहों पर नारी अर्धनग्न रूप में अपने शरीर का प्रदर्शन कर रही है। सिनेमाओं में देखने में आता है कि पुरुष तो पूरे कपड़े पहने होता है पर नारी के वस्त्र आधे होते हैं। समाज पर इसका बहुत बुरा प्रभाव पड़ रहा है। ऐसा लगता है सामाजिक संस्थाएं भी इसे मौन रूप से देख रही हैं। महिला संगठन भी इस पर कुछ नहीं कहते हैं।

किसी का भी अति स्वतन्त्र होना मर्यादाओं से बाहर जाना है इस पर विचार करना होगा। अर्धनग्न विज्ञापनों के प्रदर्शन को रोकने के लिए सरकार को सख्त कानून बनाना चाहिए। शिक्षा क्षेत्र में कॉलेज व स्कूलों में लड़कों व लड़कियों के चारित्रिक विकास पर बल देना चाहिए। पाश्चात्य संस्कार वैलेन्टाइन डे आदि पर भी प्रतिबन्ध लगाना चाहिए।

दहेज के दुष्परिणामों का मुकाबला करने के लिए सामाजिक संस्थाओं व कानून द्वारा सख्ताई से पालन करना होगा। आर्य समाज व अन्य संस्थाओं ने इस दिशा में बहुत कार्य किया है। 1959 में दहेज निरोधक अधिनियम भी पास हो चुका है जिसके अनुसार दहेज मांगने वाले को 6 मास की सजा व 5 हजार रुपये जुर्माना किया जा सकता है। इसी प्रकार विधवा की स्थिति में भी कोई मान्यता प्राप्त परिवर्तन नहीं हुआ है।

अन्त में सरकार से, सामाजिक संगठनों से, राजनेताओं से, महिला संगठनों से, शिक्षाविदों से व सामान्य महिलाओं से विनम्र निवेदन है कि वर्तमान में चरित्र हनन की जो भी घटनाऐं हो रही हैं इसको समाज के पतन के लिये छोटा न समझें। अगर इस विकट समस्या पर हम जागरुक नहीं हुए तो कालान्तर में ये समस्या कैंसर की तरह लाइलाज बन सकती है। केवल कानून बनाने से ही समस्या का सामाधान नहीं होगा हमें समस्या की तह तक जाना होगा। विशेष करके आर्य समाज जैसे जागरुक संगठन को इसमें आगे आना होगा।

नोट : इस लेख में कुछ विचार प्रोफेसर सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार जी द्वारा लिखित पुस्तक वैदिक संस्कृति की रक्षा से लिये गये हैं।

यहोवा परमेश्वर के नये रूप-संत, सांई, बाबा

-आचार्य अशोक पाल (अध्यक्ष, राष्ट्रीय आर्य छात्र सभा)

पवित्र बाइबिल के उत्पत्ति सर्ग में मनुष्य की उत्पत्ति, मनुष्य के पापी हो जाने का वर्णन और Biblical परमेश्वर का न्याय विस्तारपूर्वक वर्णित है जो कि इस प्रकार है-

"यहोवा परमेश्वर ने आदम को भूमि की मिट्टी से रचा और उसके नथुनों में जीवन का श्वास फूंक दिया और आदम जीवित प्राणी बन गया..... यहोवा परमेश्वर ने.....एक वाटिका लगाई।.....वाटिका के बीच में जीवन के वृक्ष को और भले या बुरे के ज्ञान के वृक्ष को भी लगाया।" ...और "यहोवा परमेश्वर ने आदम को आज्ञा दी-तू वाटिका के सब वृक्षों के फल बिना खटके खा सकता है; पर भले या बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है, उसका फल तू कभी न खाना। क्योंकि जिस दिन तू उसका फल खायेगा उसी दिन अवश्य मर जायेगा". ....."यहोवा परमेश्वर ने आदम की एक पसली निकालकर.....स्त्री बना दिया। यहोवा परमेश्वर ने जितने बनैले पशु बनाए थे, उन सब में सर्प धूर्त था। उसने स्त्री से पूछा-क्या सच है कि परमेश्वर ने कहा कि तुम इस वाटिका के किसी वृक्ष का फल न खाना?

स्त्री ने कहा कि जो भले-बुरे के ज्ञान का वृक्ष वाटिका के बीच में है, उसके फल के विषय में यहोवा परमेश्वर ने कहा कि न तो तुम उसको खाना और न ही छूना-नहीं तो मर जाओगे!

तब सर्प ने स्त्री से कहा कि तुम निश्चय न मरोगे! वरन् यहोवा परमेश्वर आप जानता है कि जिस दिन तुम उसका फल खाओगे, उसी दिन तुम्हारी आखें खुल जायेंगी और तुम भले-बुरे का ज्ञान पाकर परमेश्वर के तुल्य हो जाओगे!

अत: जब स्त्री ने देखा कि उस वृक्ष का फल देखने में अच्छा, मनभाऊ और बुद्धि के लिये चाहने योग्य भी है, तब उसने उसे तोड़कर खाया और आदम को भी दिया और उसने भी खाया। खाते ही उन दोनों की आंखे खुल गई, उन्हें भले-बुरे का ज्ञान हुआ, पर मरे नहीं।

जब यहोवा परमेश्वर को पता चला तब उसने सर्प, स्त्री और आदम तीनों को शापित किया। फिर यहोवा परमेश्वर ने कहा कि मनुष्य भले-बुरे का ज्ञान पाकर हम में से एक के समान हो गया है। इसलिये अब ऐसा न हो वह हाथ बढ़ाकर जीवन के वृक्ष का फल भी तोड़कर खा ले और सदा जीवित रहे। इसलिये यहोवा परमेश्वर ने उसको दर-दर भटकने के लिये अदन की वाटिका से निकाल दिया।

यह कथा पवित्र बाइबिल में है, जो प्राचीन पुस्तक अंग्रेज (ईसाई) जाति के विश्वास का वर्णन करने और उस विश्वास को बनाये रखने में सहायता के लिये लिखी गई थी। पर क्या अंग्रेजों के भारत छोड़ने के बाद भी हमारे चारों ओर यही नियम कार्य नहीं कर रहा है। क्या अंग्रेजों के आने के बाद से ही इस देश में अदन की वाटिकायें बननी प्रारम्भ नहीं हो गई हैं? विचारणीय विषय है।

क्या जिस प्रकार यहोवा परमेश्वर ने अदन की वाटिका बनाई, ठीक उसी प्रकार हमारे चारों ओर ग्राम-ग्राम, नगर-नगर में कुकुरमुत्तों की तरह यहोवा परमेश्वरों द्वारा भिन्न-भिन्न डेरों की वाटिकाओं का निर्माण नहीं हो रहा है। लगता है यहोवा परमेश्वर नाम बदलकर आ गये हैं। संत, साईं, बाबा.... आदि-आदि 786 की पदवी लेकर अदन की वाटिका बना रहे हैं। नर-नारी को ये आधुनिक यहोवा परमेश्वर इन चर्चाघरों, वाटिकाओं, डेरों में डराते, धमकाते और भय दिखाते हैं कि अक्ल का दखल नहीं करना। यहोवा परमेश्वर के मार्ग में अक्ल का दखल नहीं होता। यहाँ भले-बुरे के ज्ञान का फल मत खाना! बुद्धि का प्रयोग मत करना, नहीं तो मानव जन्म व्यर्थ जायेगा। यहोवा परमेश्वर शापित करने का भी भय दिखाते दिखाई देते हैं।

एक बार यहोवा परमेश्वर अर्थात् इन संत, सांई, बाबाओं, तथाकथित गुरुओं का नाम ले लिया तो छूटता नहीं है, आदम ही खत्म हो जाता है। कहते हैं कि तन-मन-धन यहोवा परमेश्वर के अर्पण। समर्पण के बाद सोचना मना है। विचारना मना है।

इसके बाद जो होता है-बापू आसाराम और नारायण सांई जैसों की करतूतें सब हाल बयां कर रही हैं। नर-नारी, बहनें, मातायें, परिवार सत्य को छिपाने लगते हैं; सामाजिक भय, डर, शंका, अविश्वास उन्हें कहीं का नहीं छोड़ती; वर्षों अपना शोषण, उत्पीड़न, दलन, बलात् करवाते रहते हैं।

जो आर्य सज्जन इन पीड़ित भाइयों-बहनों को सत्य-असत्य, भले-बुरे का ज्ञान करवाने का प्रयास करते हैं; उन्हें ये यहोवा परमेश्वर अर्थात् बापू, सांई, बाबा आदि सर्प, कट्टर, साम्प्रदायिक कहकर लांछन लगाते हैं।

वास्तव में सर्प नाम भी यहोवा परमेश्वरों, बाबाओं, बापूओं, सांईयों की देन है, अन्यथा ऐसे जन को जो भले-बुरे के फल अर्थात् मनुष्य का तीसरा नेत्र-विद्या को ग्रहण करने के लिये प्रेरित करते हैं, निश्चित ही आर्य, सत्पुरुष, श्रेष्ठ कहलाने के योग्य हैं, ऐसे जन कभी भी सत्य का प्रकाश करने से पीछे नहीं हटते; किसी भय, डर, शाप की परवाह नहीं करते। संघर्ष करते हैं ऐसे यहोवा परमेश्वरों के विरुद्ध और राष्ट्र को इन यहोवा परमेश्वरों से स्वतंत्र करवाते हैं और राष्ट्र उद्घोष-'सत्यमेव जयते' घोषित कर देते हैं।

पर 26 जनवरी 1950 को सत्यमेव जयते के उद्घोष के बाद भी ये यहोवा परमेश्वर जो मानवता, इन्सानियत, बुद्धिवाद के विरोधी अपने इस देश में क्या कर रहे हैं? क्या आर्य जन शिथिल हो रहे हैं? नहीं-नहीं! ऐसा नहीं हो सकता। आर्य तो आज भी संसार भर में उपकार कर रहे हैं।

अपनी ही शोषित पुत्री को देखकर पिता को भले-बुरे का ज्ञान हुआ; उन्होंने पुत्री का साथ दिया और आसाराम रूपी यहोवा परमेश्वर के विरुद्ध आवाज उठाई, F.I.R. दर्ज करवाई। जागृत जन, मिडिया वाले आगे आये, यहोवा परमेश्वर की सच्चाई को जन-जन के समक्ष रखा। पर मिडिया बापू आसाराम, सांई तक ही सीमित रह गया। लगता है मिडिया में भी पूर्ण जागरुकता भले-बुरे का ज्ञान रखने वाले श्रेष्ठ, आर्य जन नहीं हैं, हाँ उनकी इच्छा अवश्य है।

इसीलिये हे आर्यों! इन यहोवा परमेश्वरों की लूट-खसूट, शोषण, दलन के विरुद्ध बिगुल बजायें। जैसे ऋषि दयानन्द ने इन हठी, दुराग्रही, स्वार्थी यहोवा परमेश्वरों का कच्चा चिठ्ठा सत्यार्थ प्रकाश में खोला, हमें भी उन्हें आदर्श मानकर आर्य वंशियों को, आर्यावर्त्त को इन यहोवा परमेश्वरों से मुक्त करवाना ही होगा। सुख, शान्ति, वैभव प्राप्ति के लिये यह हमारी विवशता भी है। ऐसे में अर्द्ध-जागरुक मिडिया को भी जागृत करना होगा। ज्ञान के फल के साथ-साथ; जीवन का फल भी मानव जाति को खिलाना होगा। तभी हम सब जीवन का ध्येय, धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष को प्राप्त कर सकते हैं। आओ युवाओ!आर्यों!आर्याओं!!! हम ईश्वर के आदेश मनुर्भव (मनुष्य बनो-मनुष्य बनाओ, ज्ञान का फल खाओ-खिलाओ) का पालन करें और अपने परम धर्म पर जुट जायें।

लेखमाला–6

ईशोपनिषद् की व्याख्या

–प० गुरुदत्त विद्यार्थी, एम.ए. द्वारा व्याख्यित

वैज्ञानिक नास्तिकता और दृश्य पदार्थों की पूजा के नाना रूप सर्वथा भिन्न-भिन्न परिणाम उत्पन्न करते हैं। पर ज्ञान के द्वारा इनसे भी काम लिया जा सकता है, और उस समय ये पहले की सी घृणोत्पादक वस्तुऐं नहीं रहते। ज्ञान का प्रबल हाथ दृश्य-पदार्थों से वह इन्द्रिय-शिक्षा और हितकर उपयोग निकालता है जो कि सारे आन्तरिक विकास का प्राथमिक मूल और दृढ़ आधार-शिला है। इस प्रकार मनुष्य का जीवन-काल एक रम्य, शिक्षाप्रद, और बलवर्धक, यात्रा में परिवर्तित हो जाता है। यह यात्रा मृत्यु के अदृश्य प्रवेश द्वारों में से सनातन शान्ति तक ले जाती है। न केवल ब्रह्माण्ड की दृश्य सामग्री ही इस प्रकार भविष्य के लिए प्रचुर और उपयोगी भण्डार बन जाती है, प्रत्युत अदृश्य और तोड़ फोड़ के अयोग्य परमाणु भी, ज्ञान के हाथ के स्पर्श से, सर्वशक्तिमान विधाता की शक्ति का आसन दीखने लगते हैं। परमाणु वे वाहन मात्र हैं जिनके द्वारा परमेश्वर दृश्य पदार्थों में स्थायी शक्ति और जीवन का संचार करता है। इस प्रकार **"जो मनुष्य दोनों का अनुभव कर लेता है, वह मृत्यु के उपरान्त जो कि दृश्य पदार्थों की उपासना का फल है, अमरत्व का, जो कि परमाणुओं में प्रकट होने वाली दिव्य शक्ति के अनुभव का फल है, उपभोग करता है।"**

आओ यहाँ कुछ ठहर कर उस उच्चपद की परीक्षा करें जिस पर कि हम चढ़ चुके हैं। एक तो ब्रह्माण्ड का चक्रवर्ती राजा, परमेश्वर है, जो कि सब में व्यापक, सब का न्यायकारी, प्रत्येक के लिए उसका अपना अपना काम नियत करने वाला है। इधर एक मनुष्य प्रबल, कर्मोद्युक्त कार्यशक्ति, ओजस्वी क्षमता, और सर्व-साधक उद्यम से सम्पन्न है। वे उसे मिले हुए कार्य को पूरा करने के लिए पर्याप्त हैं। उधर ऐसा प्रशस्त, ऐसा सुन्दर, ऐसा चित्ताकर्षक, ऐसा उपयोगी, ऐसा हितकर, और ऐसा सुखर ब्रह्माण्ड है कि सब दानों के परमदाता की ओर अत्यंत कृतज्ञता के साथ दृश्य उठता है **"हे जगत् के प्रतिपालक! सच्चे सूर्य के उस मुख पर से आवरण को हटा दे जो कि अब सुवर्णीय प्रकाश के परदे के भीतर छिपा हुआ है, जिससे हम सत्य को देखें और अपने धर्म्म को पहचानें। हे ऋषियों के भी महर्षि, रक्षक, शासक, सनातन प्रकाश, और सृष्टि के प्राण! अपनी किरणों को इकट्ठा कर, जिससे मैं तेरे परमानन्द से पूर्ण तेजोमय रूप का अनुभव करने में समर्थ होऊँ। यही मेरी सच्ची प्रार्थना है।"** अद्भुत है वह अमर जीवन जो तू दान देता है, आश्चर्य है वह न्याय जो तू करता है। स्थूल शरीर से अमर सूक्ष्म शरीर के उत्पन्न करने की रीति कैसी श्रेष्ठ है। क्योंकि, मृत्यु के उपरान्त भी, तू हमें ऐसे लोक में बसाता है जिसके उपभोग कि उन्हीं बीजों के फल हैं जो कि इस लोक में हमने अपने कर्म्मों के रूप में बोये हैं।

"हे ज्ञानस्वरूप! आप ज्ञान के स्रोत हैं। हमारे अन्दर अपना ज्ञान फूंकिये, हमें न्यायपरता की ओर ले जाइये, और हमारे सारे दुर्गुणों को दूर कर दीजिये। इस प्रयोजन से हम बारम्बार आपकी स्तुति और उपासना करते हैं।"

–समाप्त

कहती वेदों की वाणी है

–आर्य देवेन्द्र, दरियापुर कलां, दिल्ली

बड़े कर्मों से हे प्राणी तुझको, मिला दुर्लभ तन इंसानी है।
करें राष्ट्र के लिए कार्य, यह जिन्दगी सफल बनानी है॥
बड़ा सुख है प्रभु भक्ति में, कहती वेदों की वाणी है॥

तेरा असली काम कौन-सा है, यह वेद तुझे बतलाते हैं।
बड़े कर्मों से हे.....कहती वेदों की वाणी है॥

क्या उद्देश्य है इस जीवन का, यह वेद तुझे समझाते हैं॥
बड़े कर्मों से हे.....कहती वेदों की वाणी है॥

वेदों की वाणी को हे मनुष्य, दिल में अपने बसानी है।
बड़े कर्मों से हे.....कहती वेदों की वाणी है॥

अच्छे कर्मों को करते हुए, ईश्वर की नसीहत मानी है॥
बड़े कर्मों से हे.....कहती वेदों की वाणी है॥

नर तन है साधन इस साध कर वेदों की शिक्षा पानी है।
बड़े कर्मों से हे.....कहती वेदों की वाणी है॥

मगर ये होगा जब तब तुमने जीवन में इस शिक्षा की ठानी है॥
बड़े कर्मों से हे.....कहती वेदों की वाणी है॥

धर्म पालन की लगन सदा, दिल में अपने बसानी है।
बड़े कर्मों से हे.....कहती वेदों की वाणी है॥

चाहत यम-नियम पालन में, ऐसी लगन लगानी है॥
बड़े कर्मों से हे.....कहती वेदों की वाणी है॥

उम्र बढ़ती जाती तृष्णा, जो दु:ख चिन्ता की खानी है।
बड़े कर्मों से हे.....कहती वेदों की वाणी है॥

ध्यान-धारणा-समाधि से ईश्वरीय सुख की ठानी है।
बड़े कर्मों से हे.....कहती वेदों की वाणी है॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा की वेबसाईट पर उपलब्ध

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा की वेबसाईट www.aryanirmatrisabha.com व www.aryanirmatrisabha.org से भी पत्रिका को प्राप्त किया जा सकता है। पाठकगण पत्रिका को उपरोक्त साईट से डाऊनलोड कर पढ़ सकते हैं व सत्रों की सूचना भी प्राप्त की जा सकती है।

सूचना

सभी आर्यगणों से अनुरोध है कि राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा द्वारा भिन्न-भिन्न स्थानों पर आयोजित होने वाले कार्यक्रमों सम्बन्धी सूचना पत्रिका के ई-मेल पते :- krinvantovishwaryam@gmail.com पर भेंजे साथ ही सम्बन्धित चित्र (फोटो) भी इसी पते पर भेज देंवे जिससे कि उनको समय पर पत्रिका में प्रकाशित किया जा सके

आओ यज्ञ करें!

अमावस्या	30 जनवरी	दिन-बृस्पतिवार	मास-माघ	ऋतु-शिशिर	नक्षत्र-उत्तराषाढ़ा
पूर्णिमा	14 फरवरी	दिन-शुक्रवार	मास-माघ	ऋतु-शिशिर	नक्षत्र-आश्लेषा
अमावस्या	1 मार्च	दिन-शनिवार	मास-फाल्गुन	ऋतु-बसन्त	नक्षत्र-शतभिषा
पूर्णिमा	16 मार्च	दिन-रविवार	मास-फाल्गुन	ऋतु-बसन्त	नक्षत्र-पूर्वाफाल्गुनी

लेखमाला–10

डेरावाद : सैद्धान्तिक विश्लेषण

-दयानन्द आर्य, बिठमढ़ा, हिसार

प्रश्न : 67 बहुत से ऐसे लोग हैं जिन्हें दीक्षा प्राप्त हो गई है, वे अनमने होकर इस मार्ग को अपना तो लेते हैं, परन्तु पूर्णतया तैयार नहीं होते....कोई नुकसान नहीं, देर-सवेर वे सभी मार्ग पर अवश्य लौट आएंगे। यह वापसी 1, 2, 3, या 4 जन्मों से अधिक समय नहीं ले सकती। इस दौरान भी गुरु उनकी सहायता करते रहते हैं। पृ. 257

टिप्पणी : आप कहते हैं (पृ. 95,173 आदि) पूर्ण-ज्ञानी सत्गुरु अपात्र, अयोग्य अनमने (लग्नहीन) को दीक्षित ही नहीं करते। पूर्ण-ज्ञानी गुरु से 'बहुत-से' ऐसे कैसे छूट जाते हैं ?

दूसरा अब आप स्वीकार करते हैं कि 'नाम-दान' पाना मोक्ष की, 'इसी जन्म में मोक्ष' की, 'जीते-जी' मोक्ष की गारन्टी नहीं है। सारी-पुस्तक में मोक्ष की निश्चिता की बात करते रहे, यहाँ एक वाक्य में नकार कर सुरक्षित रास्ता बना लिया। अर्थात् आपने स्वीकार कर लिया कि मोक्ष आत्मा के व्यक्तिगत कर्मों का फल है, गुरु-आचार्य का तो प्रारम्भिक मार्गदर्शन तो हो सकता है, कोई चमत्कारिक कृपा या भूमिका नहीं।

अब कहते हो दीक्षा मात्र ले लो इस जन्म में न सही, चौथे, पाँचवे जन्म बाद अर्थात् 250-300 वर्ष बाद ही सही-मोक्ष पक्का है। गुरु जी पाँचों-जन्म कृपा बनकर आप के साथ ही रहेंगे। वाह रे! पूर्ण ज्ञानियो! क्या जाल बुना है! क्या पूर्ण वैज्ञानिक विधि गठी है! औरों को एक जन्म में फंसाने के चक्र-जाल में, पूर्ण ज्ञानी मूर्ख ने अपना भी अंधियारे लोक-पृथ्वी (बकौल सतगुरु) पर पूरे पाँच जन्मों के वास्ते दु:ख-झेलना पक्का कर लिया। क्या सतगुरु महाशय को खुद मोक्ष नहीं मिला जो मृत्यु बाद भी शिष्यों के दु:ख-बुराईयों से जुड़े हैं?....और जो सतगुरु मृत्यु पश्चात् बिना शरीर के एकदेशी आत्मा होकर भी ध्यान रख सकते, तो क्या आप मुक्ति के लिए सतगुरु का होना आवश्यक बताते? प्रश्न 48, पृ. 176

प्रश्न : 68 एक बार दीक्षा (नाम-दान) के बाद किसी भी इन्सान का मन जीवन भर पाप-कर्मों में लिप्त नहीं रह सकता। पृ.258

टिप्पणी : प्रथम तो व्यवहार में आपके दीक्षितों को यूं का यूं ईर्ष्या, द्वेष, वासनाओं के साथ मरते देखा जाता है। और फिर यदि ऐसा होता है तो आप ही क्यों कहते (प्र. 67) कि चार जन्म और भी मुक्ति में लग सकते हैं। अर्थात् दोनों में से एक जगह आप झूठ बोल रहे हैं। आपकी और दीक्षा की महिमा बढ़ाने का यह नाटक-बिना किसी वैज्ञानिक आधार के नाटक ही रह जाता है।

प्रश्न : 69 यह सतवेश सृष्टि का मुख्य केन्द्र है, यह परमात्मा का निवास-स्थान है। पृ. 272

टिप्पणी : जिसका निवास स्थान भी है, उसका तो शरीर भी होगा। अत: वह तो एकदेशीय ही होना चाहिए। फिर आप कैसे कह सकते हैं कि वह कण-कण में बसता है। अरे! निवास-स्थान में रहने वाला अपने निवास से तो छोटा ही होता है। अत: वह सर्वव्यापक तो हो ही नहीं सकता। निवास स्थान वाला मानने से और भी दोष परमात्मा में मानने पड़ेंगे-यथा वहाँ नौकर, चाकर, उनके परिवार-सन्तान, भोजन-मल, रोग-शोकादि। अरे स्वार्थी लोगो! क्यों अविद्या में डूब, ईश्वर का अपमान कर पाप-कर्मों में फंसे हो, औरों को फंसा रहे हो।

प्रश्न : 70 सूक्ष्म जगत् के कथित तीसरे नीचले भाग तथाकथित अंड पर पृथ्वी पर जन्म ले चुके सभी युगों के इतिहास प्रसिद्ध लाखों को यहाँ देखा जा सकता है। इनमें से कई इस लोक के निवासी हैं। वे बहुत आनन्द में हैं। फिर भी सतगुरुओं के मार्ग में यह पहला मुकाम है। पृ. 275।

टिप्पणी : क्या मृत्यु (मोक्ष) के बाद भी पृथ्वी के जन्म वाली कोई निशानी (टैग) या शरीर-नाम साथ में ही जुड़ा रहता है? फिर पृथ्वी पर तो उनके कई जन्म हुए होंगे। दूसरा, जब आप ऐसे-एसे चमत्कार दिखाते-बताते नहीं शर्माते तो यहाँ और रचनात्मक-कल्याणकारी चमत्कार क्यों न दिखाते हो? क्यों बकौल आपके पूर्ण सतगुरु-सिख सतगुरु तेग बहादर जी, गोविन्द सिंह जी मुसलमानों से धोखा खाते रहे? उनकी चमत्कारपूर्ण कथित शक्ति जैसा आप बताते हैं, क्यों न काम आ सकी? क्योंकि आपको तो अपना मतलब सिद्ध करना है।

और जो कोई रामपाल दास यह दावा कर दे कि आप लोगों का जो कथित आठवाँ मण्डल है, उसके मार्ग का वह पहला मुकाम है। कथित सतदेश तो उससे भी दो या पाँच मंडल ऊपर है, जहाँ आप कभी पहुँचे ही नहीं हो, तो आपसे बड़े झूठे के झूठ को आप झूठ कैसे साबित करोगे ?

प्रश्न : 71 सतगुरु मनुष्यों से सर्वश्रेष्ठ हैं। वे इस लोक के स्वामी (तथाकथित कालनिरंजन) या सृष्टि के किसी अन्य स्वामी के आदेशानुसार कार्य नहीं करते, बल्कि सतपुरुष के आदेशानुसार कार्य करते हैं। वे सतपुरुष के मुख्य प्रबन्धक हैं। पृ. 300।

टिप्पणी : क्या तथाकथित सतगुरु मुक्त आत्मा हैं? मुक्त हैं तो पुन: जन्म क्यों लेना पड़ा? जन्म में तो दु:ख, रोग, शोक, मृत्यु सब कष्ट हैं। अत: यह कथित महान् आत्मा, कथित ईश्वर-पुत्र-प्रबन्धक अभी भी जन्म मरण में फंस कर किन बुरे कर्मों का फल दु:ख रूप में झेलता है। अत: वह मोक्ष प्राप्त आत्मा नहीं हो सकता। अत: ऐसी निम्न या साधारण स्तरीय आत्मा सतपुरुष से मिलने, उसके प्रतिनिधि होने, कथित ब्रह्म, काल से भी मुक्त, सीधे परमात्मा से आदेश लेने का दावा करे-तो क्या बिना विवेक का प्रयोग किए, आँख-मूंद कर मान लें। इससे तो परमात्मा अन्यायी सिद्ध हो जाएगा।

और आप जो कथित काल से भी ऊपर हैं तो उसकी व्यवस्था के अनुसार रोग, क्षय, मृत्यु आदि घोर कष्टों के शिकार क्यों बन बाते हो? वाह रे पाखण्डियों! यह लीला वैदिक-ज्ञान के रहते निर्बाध नहीं चल सकती। सत्य को स्वीकार कर आर्यों के वंशजों पर कृपा करो, उन्हें भी विद्या ग्रहण करने दो।

प्रश्न : 72 यह एक महत्वपूर्ण तथ्य है कि सतपुरुष के अलावा इस विराट व्यवस्था के किसी भी सदस्य में आत्मा की रचना करने की शक्ति नहीं है, न ही वे आत्मा का नाश कर सकते हैं। पृ. 303।

टिप्पणी : जो परमात्मा ही आत्मा की रचना करता है तो रचना करके वह उसे किस जन्म-योनि में भेजेंगे? परमात्मा ने पवित्र-आत्मा की रचना की या अपवित्र की? बिना कर्म किए उसे कैसी योनि और क्यों? क्या परमात्मा को आत्माओं को कष्ट देने में आनन्द आता है? यदि नहीं तो क्यों बिना कारण जन्म-मरण कष्ट में डाला? क्या इससे उसे अन्यायी और द्वेषी नहीं कहा जायेगा?

और आत्मा का नाश कब-क्यों कैसे होता? यह नाश तो मुक्ति के समान आनन्ददायक ही क्यों न कहा जाए? अरे बुद्धुओं! वेद से जानो तीन पदार्थ परमात्मा, आत्मा और कारण रूप-प्रकृति अनादि-अनन्त हैं। न इनका जन्म होता न विनाश या अन्त।

प्रश्न : 73 इस अन्धेरे-मायामय लोक में हमारा वास्ता काल से है। मुक्ति के लिए हमें काल-शक्ति से मुकाबला-संघर्ष करना होगा। यह संघर्ष हमें निर्मल करके निज-घर जाने को तैयार करता है। पृ. 304।

टिप्पणी : आपके मार्गानुसार-परमात्मा ने हमें बाँधने के लिए काल (नकारात्मक शक्ति) बनाया या रचाया और मुक्ति के लिए सतगुरु भेजा। इन दो परस्पर विरुद्ध कार्य करने वाली चेतन शक्तियों को बनाकर क्या परमात्मा ने आत्माओं के साथ अन्याय नहीं किया? क्या पिता, परमपिता ऐसा होता है? अरे साधारण पिता भी ऐसा नहीं करता। क्या परमपिता आत्माओं की रचना करके उन्हें बुरी शक्ति "काल" के हाथों सौंप सकता है? नहीं, परमपिता ऐसा द्वेषी और अन्यायी नहीं हो सकता। क्यों अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिए अविद्या में पड़े रहकर परमपिता को ही लांछित करने का पाप-कर्म करते हो।

क्रमश:

द्विदिवसीय आर्य/आर्या प्रशिक्षण के बाद सत्रार्थियों के अनुभव

आर्य निर्माण करने का यह तरीका अति उत्तम लगा। इसके अंतर्गत जहाँ हमें अपी मूल पहचान का अहसास/बोध करवाया गया उसी प्रकार वैदिक संस्कृति का परिचय की सार रूप में बड़े प्रभावी तरीके से बोध करवाया गया।

सुझाव–इस प्रकार के कार्यक्रम हर राज्य में स्थान–स्थान पर आयोजित किये जाएं क्योंकि हमारे समाज के लोग अज्ञानतावश विभिन्न संप्रदायों के प्रलोभनों में आकर उनके मकड़–जाल में इस प्रकार फंस रहे हैं कि वे मौलिक जीवन आदर्शों को छोड़ उन्हीं के स्वार्थ या पापपूर्ण सिद्धान्तों में फंसते जा रहे हैं और उन्हें ही मौलिक सिद्धान्त मानने लग जाते हैं।

अभी मात्र अपने आपको ही मैं इस यज्ञ में ला पाया हूँ यद्यपि मैं आर्य संस्कृति का शुरु से ही प्रचार व प्रसार करता रहा हूँ।

मुझे एक आर्य प्रशिक्षक बन यह कार्य आगे बढ़ाना है। मैं केवल छुट्टियों के दौरान इस प्रकार का प्रशिक्षण ले सकता हूँ। अत: आप से विन्रम प्रार्थना है कि इस संबंध में मेरी यथोचित सहायता की जाए।

मैं हिमाचल प्रदेश के बिलासपुर जिला से सबंध रखता हूँ। वहाँ जिला केन्द्र को छोड़ ग्रामीण क्षेत्रों में आर्य समाज का नाम तक नहीं है। अत: वर्ष का कम से कम एक सप्ताह आर्य निर्मात्री सभा ऐसे स्थानों में प्रचारार्थ रखे और इस प्रकार के दूरस्थ स्थानों में अपनी संस्कृति से विमुख लोगों को जहाँ तक संभव हो परिचय दे। भिखारी भीख मांगने के लिए दर–दर घूमता है लेकिन हम अपनी संस्कृति, वेद सिद्धान्तों को ले उन लोगों के बीच जाएं अपनी संस्कृति की वास्तविक तस्वीर उन्हें दिखाएं और पथ भ्रष्ट होने से बचाएं। इसके साथ ही जय आर्य। जय आर्यावर्त्त।

राजकुमार आर्य, आयु-42 वर्ष, योग्यता -एम.ए., बी. एड.
गांव व डाक-छत, बिलासपुर, हिमाचल प्रदेश

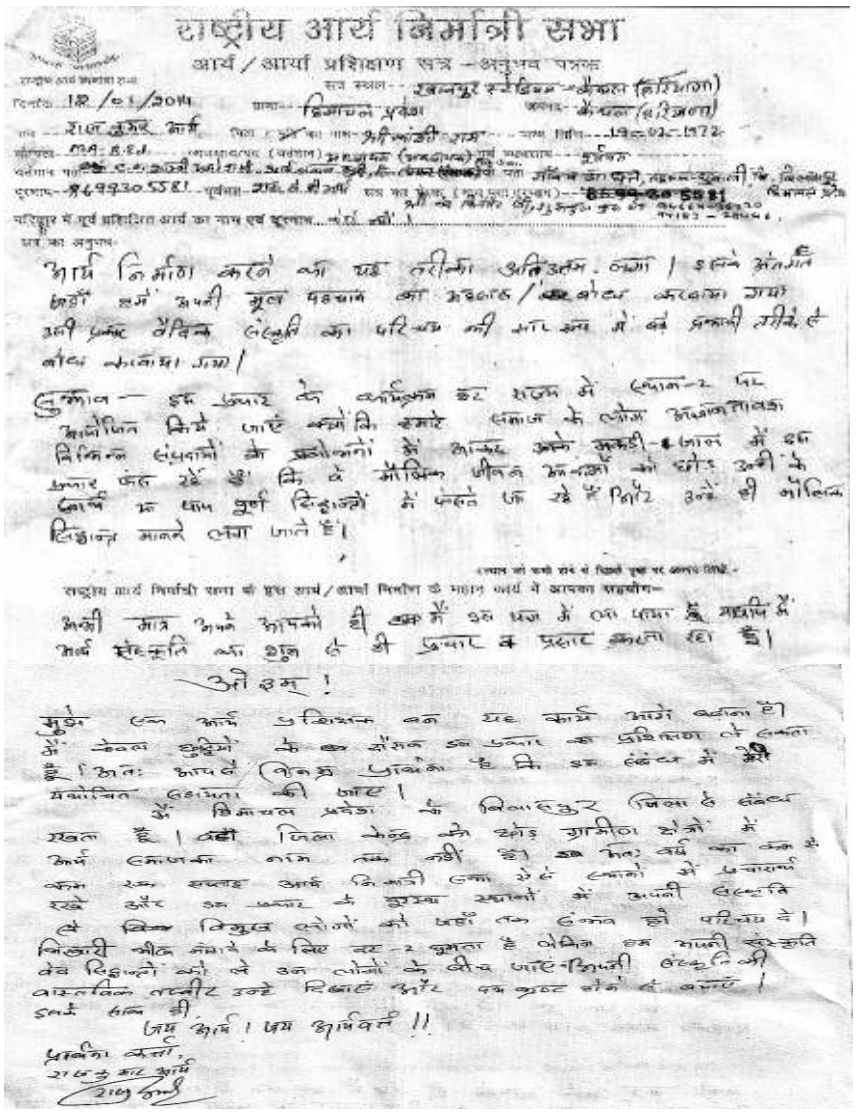
राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा
आर्य/आर्या प्रशिक्षण सत्र – अनुभव पत्रक

मैं इस सत्र में आने से पहले मैं हिन्दू धर्म को मानता था तथा मूर्ति पूजा तथा अन्य अंधविश्वासों में विश्वास करता था। लेकिन मुझे इस सत्र में आने से सभी अंधविश्वासों और मूर्ति पूजा जैसे अंधविश्वास से छुटकारा मिल गया है। इससे मुझे पता चला कि ईश्वर एक है सर्वज्ञ, चेतन, सत्य है। और मैं ईश्वर पर विश्वास करता हूँ। ईश्वर की प्राप्ति के लिये उपासना करना जरुरी है।

मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि सभी बुरी संगतियों को छोड़कर ज्यादा से ज्यादा आर्य बनाने का कार्य करूंगा।

महेन्द्र सिंह, आयु-33 वर्ष, योग्यता-इंटरमीडियट
गांव टीक डा.टीक, जिला-कैथल, हरियाणा

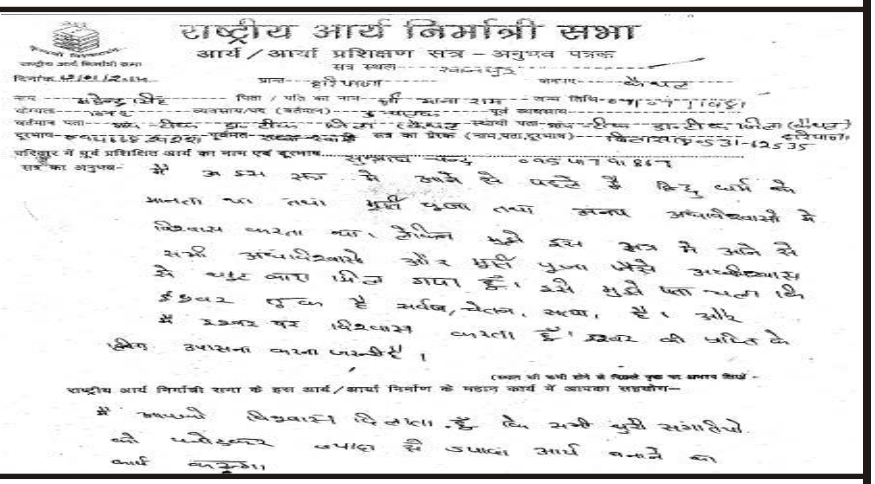
राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा
आर्य/आर्या प्रशिक्षण सत्र – अनुभव पत्रक

इस सत्र में मैंने बहुत कुछ सीखा। पहले मुझे देवी देवताओं पर बहुत विश्वास था। मैं मानता था कि हमारे जीवन में सब कुछ देवी देवताओं की कृपा से होता है। लेकिन इस सत्र में आने के बाद अब में किसी मूर्ति पूजा, किसी देवी देवता पर विश्वास नहीं करता और मानता हूँ कि हमें पुरुषार्थ करना चाहिए। हमें धर्म के पथ पर चलना चाहिए। ईश्वर सर्वज्ञ, चेतन, सर्वशक्तिमान्, सर्वव्यापक, एक, कर्त्ता, न्यायकारी, दयालु है। और अब में आर्य धर्म को स्वीकार करता हूँ और सारे जीवन इसके बताये गये सिद्धांतों पर चलूँगा।

विनित शर्मा आर्य, आयु-22 वर्ष, योग्यता-बी. टेक.
गांव टीक डा. फतेहपुर पुट्ठी, बड़ौत, उ. प्र.

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा
आर्य/आर्या प्रशिक्षण सत्र – अनुभव पत्रक

संध्या काल

माघ मास, शिशिर ऋतु, कलि-5114, वि. 2070
(17 जनवरी से 14 फरवरी 2014)
प्रात: काल: 5 बजकर 45 मिनट से (5.45 A.M.)
सायं काल: 6 बजकर 45 मिनट से (6.45 P.M.)

फाल्गुन मास, बसन्त ऋतु, कलि-5114, वि. 2070
(15 फरवरी 2014 से 16 मार्च 2014)
प्रात: काल: 6 बजकर 15 मिनट से (6.15 A.M.)
सांय काल: 6 बजकर 30 मिनट से (6.30 P.M.)

आर्य निर्माण राष्ट्र निर्माण

आर्य प्रशिक्षण सत्र (21-22 दिसम्बर) आर्य समाज, आरा (बिहार) में आचार्य योगेश जी व अन्य आर्यगण

आर्य प्रशिक्षण सत्र (11-12 जनवरी) नांगल ठाकरान, दिल्ली

में आचार्य यशवीर जी व अन्य आर्यगण

आर्य प्रशिक्षण सत्र (25-26 जनवरी) लोनी, गोजियाबाद में आचार्य हनुमत् प्रसाद जी

आर्य प्रशिक्षण सत्र (25-26 जनवरी) कतलुपुर, सोनीपत में आचार्य राजेश जी व आर्य संजय जी

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् पत्रिका की सदस्यता हेतु 100 रुपए द्विवार्षिक शुल्क मनीआर्डर से प्रांतीय कार्यालय के पते पर भेजें, स्थानीय राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा के सदस्यों के पास भी शुल्क जमा कर रसीद ले सकते हैं। पूरा पता अवश्य लिखें, न पहुंचने पर दूरभाष से कार्यालय में सूचना दें। जिन सदस्यों की सदस्यता एक वर्ष से अधिक पुरानी है वे अपनी सदस्यता का नवीनीकरण करवा लेवें।

स्वामी व प्रकाशक आचार्य परमदेव मीमांसक एवं सम्पादक आचार्य हनुमत् प्रसाद द्वारा सांगोपांगवेद विद्यापीठ, आर्ष गुरुकुल, टटेसर-जौन्ती, दिल्ली-81 से प्रकाशित एवं सुदर्शन प्रैस, दिल्ली-87 से मुद्रित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् - समाचार पत्र मे छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक का पूर्णतया सहमत होना आवश्यक नहीं है। क्योंकि अनवधानतावश त्रुटि एवं मतभिन्न होना सम्भव है। सभी न्यायिक विवाद दिल्ली में निपटाये जाएंगे।